फिरोज़ शाह तुगलक एवं उसका प्रशासन (1351-88)

⇒ मुहम्मद तुग. का चचेरा भाई फिरोज़ शाह तुगलक शासक बना।

⇒ वह अपने दूरस्थ प्रांतों को स्वतंत्र होने से रोकने के प्रयास में नहीं लगा रहा और उलेमाओं को खुश रखकर दिल्ली में ही शासन करना उसने उचित समझा।

⇒ क्योंकि इसी शर्त पर उलेमाओं ने उसे राजा भी बनाया था।

⇒ सुल्तान ने सिंध से लेकर दिल्ली तक के सभी मस्जिदों एवं दरगाहों पर खुलकर दान दिया।

⇒ दक्षिण में विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य की स्थापना में फिरोज़शाह ने कोई रोक टोक नहीं की।

⇒ कोई भी युद्ध फिरोज ने साम्राज्यविस्तार के लिये नहीं अपितु ~~[illegible]~~

JANUARY
16
SATURDAY
1999

साम्राज्य को आक्रमण से बचाने के लिये किया इसी लापरवाही से बंगाल भी स्वतंत्र हो गया।

⇒ सिंध पर किया गया एक मात्र आक्रमण उसकी घोर सैन्य असफलता को दर्शाता है। यद्यपि अन्ततोगत्वा वह जीत गया किन्तु संधि के द्वारा सिंध शासक को बहुत अधिक भेंट आदि दी।

⇒ किन्तु दूसरी ओर उसके बहुत सारे प्रशासनिक सुधार भी थे जो इसप्रकार थे -

1) भूराजस्व का पुर्नमूल्यांकन (Assessment of Revenue)

उसने पुराने चले आ रहे भूराजस्व का पुर्नमूल्यांकन किया। इसमें लगभग
17 Sunday
उसको 6 वर्ष लग गये। जिससे राज को होने वाली आय तय हो गई।

2) नवीन कर → उसने इस्लाम के आधार पर कुछ नये कर दिये -

1) खराज - जो कि कुल उपज का 1/10 था
2) जकात - यह केवल मुसलमानों से ली

J A N | S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S
31 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30

जाती थी और 2.5% अपनी आय की होती थी।

खम्स - यह युद्ध में लूट के माल पर लगता था $\frac{1}{5}$ सरकार का $\frac{4}{5}$ सैनिकों का।

जजिया - यह हिन्दुओं से लिया जाने वाला कर था।

अन्य कर - इसके अतिरिक्त सिंचाई कर, बाग कर और चुंगी भी लगाये जाते

3) **सिंचाई कार्य :-** इसने सिंचाई के क्षेत्र में बहुत कार्य किया

1) उसने सबसे लम्बी नहर जो यमुना नदी से हिसार तक जाती थी बनवाई।

2) इसी प्रकार सतलुज से घग्घर तक एवं अन्य नहरें बनवाई जिनसे उन स्थानों में भी सिंचाई संभव हो सकी जहाँ नदियाँ न थी।

4) **बगीचों का निर्माण :-** लगभग 1200 बगीचे दिल्ली के आसपास बनवाये। इन बगीचों से आने वाले फलों से सालाना आय बढ़ गई।

कृषकों को राहत - मुहम्मद तुगलक के समय अकाल के समय लगाये कर्ज को इसने माफ कर दिया और राजस्व वसूलने वालों को उनके प्रति उदार रहने को कहा।

दीवान-ए-खैरात - के द्वारा गरीब बच्चियों की शादी का खर्च आदि दिया।

दार-उल-शफा - राज्य स्वास्थ्य सुविधाओं से सम्बन्धित था नये अस्पताल खोले गये।

सराय - लगभग 200 सराय व्यापारिक पथों पर बनाई गई।

लोक कल्याण कार्य - फिरोज ने इस प्रकार 4 नहरें, 10 स्नानघर, 4 मस्जिदें, 30 छोटे महल, सराय, कस्बे और पुल बनाये।
जौनपुर, फतेहाबाद, फिरोजाबाद, हिसार आदि का निर्माण इसी ने किया।

अशोक के दो स्तम्भ मेरठ और टोपरा से दिल्ली लाये गये।

शिक्षा एवं साहित्य में सुधार – उसने कई इतिहासकार, कवियों को प्रश्रय दिया। उसने खुद अपनी आत्मकथा फतुहात-ए-फिरोजशाही नाम से लिखी। छात्रों को छात्रवृत्ति देता था।

न्यायिक सुधार – उसने अपने शासन में कई के लिये कुछ सुधार किये किन्तु नृशंस सजाओं का अंत किया।

सिक्कों में सुधार – उसने कई नये सिक्के चलाये और पुराने सिक्कों की कमियों को दूर किया।

इस प्रकार फिरोज तुगलक की साम्राज्यिक असफलताओं की तुलना में उसके प्रशासनिक सुधार अधिक महत्वपूर्ण हैं जिनके लिये इसे आज भी याद किया जाता है।

—x—